Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता : एक अध्ययन

डॉ0 प्रभा कुमारी
एम.ए., पीएच.डी. (मनोविज्ञान)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

वर्तमान युग में शिक्षा की प्राचीन अवधारणा परिवर्तित हो गई है। शिक्षा का तात्पर्य बालको को केवल सूचना देना ही नही है। बल्कि बालक का सर्वागीण विकास करना है। और यह तभी संभव है जबकि शिक्षक को बालक के बारे में पूर्ण ज्ञान हो। शिक्षा मनोविज्ञान बालक को समझने में शिक्षक की सहायता करता है। क्योंकि शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षा और सीखने संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की आवश्यकता को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

सामग्री का चयन तथा व्यवस्था

शिक्षण का कार्य छात्र को नवीन ज्ञान तथा कौशल का प्रशिक्षण देना है। प्रतीक स्तर पर ज्ञान प्रदान करने के लिए अनेक विधियों को अपनाना पड़ता है। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षण–सामग्री के उचित चयन तथा उसकी व्यवस्था का ज्ञान कराता है।

अपना पाठ्यक्रम समझकर छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता है। प्रत्येक बालक क्च सीखने का ढ़ंग अलग होता है। टीचर को सीखने की क्रिया के मार्गदर्शन का ज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान ही देता है।

मूल्यांकन

अध्यापक जो भी ज्ञान देता है उसका प्रभाव तथा उस ज्ञान के कारण बालकों में क्या व्यावहारिक परिवर्तन हुए हैं। इसकी जानकारी शिक्षा मनोविज्ञान ही देता है। मूल्यांकन के अंतर्गत कौन–कौन सी बातें काम मिली जाएं जिसे बालक का संपूर्ण रूप से मूल्यांकन हो जाए आदि की जानकारी शिक्षा मनोविज्ञान की प्रदान करता है।

1. अपने आप को समझना

एक शिक्षक मैं अपने व्यवसाय की अनुकूल योगिताऐ है या नहीं उस स्वभाव, जीवन दर्शन बुद्धि स्तर, अपने निर्धारित मूल्य, अध्यापकों एवं अभिभावकों से संबंध, व्यवहार, चारित्रिक गुण, अध्यापक योग्यता की समाज में

क्या प्रक्रिया हैं। अध्यापक की आवश्यकता क्या है। आदि सभी बातों की जानकारी कराने में शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक की सहायता करता है।

विद्यार्थियों को समझना

सीखने की क्रिया में बालक के व्यक्तित्व की आवश्यकताओं का ज्ञान अध्यापक के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए एक बालक ज्ञान से ही शिक्षण सिर्फ समस्या है जिसका समाधान वह केवल दंड विधि से देखता है।

प्रत्येक बालक में रूचि, सम्मान, स्वभाव तथा बुद्धि की दृष्टि से भिन्नता पाई जाती है। इन व्यक्तिक भेदों को जानकर शिक्षक शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा मंदबुद्धि तथा कुशल बुद्धि बालकों में भेद कर सकता है।

शिक्षण पद्धति

शिक्षा मनोविज्ञान में सीखने के ऐसे अनेक सिद्धांतों का उल्लेख किया जाता है, जिसकी सहायता से अध्यापक अपने शिक्षक की विधियों का निश्चय कर सके।

मूल्यांकन

यह जानने के लिए किस शिक्षार्थी नये ज्ञान को प्राप्त करने योग्य है अथवा नहीं। अर्थात बालक के ज्ञान की थाह लगाने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की और दिखा जाता है।

समस्याओं का निदान

शिक्षण कार्य में अध्यापक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है इन समस्याओं के निदान तथा निराकरण में शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक की बहुत सहायता करता है।

उपर दिये गए सभी तथ्यों से स्पष्ट होता है कि एक अध्यापक को अपना शिक्षण प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

1. बाल केन्द्रित शिक्षा

अब शिक्षा बाल केंद्रित हो गई है। बालक की योग्यता, क्षमता, रूचि, अभिरूचि आदि के अनुसार पाठ्यक्रम प्रशिक्षण विधियों का निर्माण किया गया है। आज का बालक गुरू के कठोर नियंत्रण से मुक्त है। पाठ्यक्रम का निर्माण बाल केन्द्रित ही होता है।

अनुशासन

डंडे से मारपीट एवं भय के बल पर छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं किया जा सकता है। अतः प्रजातांत्रिक आधार पर स्व अनुशासन बनाए रखने पर बल दिया जाता है।

शिक्षण पद्धतियों में परिवर्तन

प्राचीन पद्धति में शिक्षक रटंत विधि पर बल देते थे। आज अनेक मनौवैज्ञानिक शिक्षण पद्धतियों का विकास हो गया है। जिसके अनुसार शिक्षा देने से बालक की अंतर निहित शक्तियों का विकास होता है एवं अभी अभिव्यक्ति को माध्यम मिलता है। जिससे शिक्षा रूचिकर व आनंदमई बनाई जा सकती है।

पाठ्यक्रम

डेनिस ने शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व बताते हुए कहा कि ''शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षण से ज्ञात छात्रों की क्षमता तथा व्यक्तिगत भेद इनसे छात्रों के शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को अधिगम के नियमों से अवगत कराता है जिससे शिक्षक अधिक प्रखर हो जाता है उसका आत्मविश्वास बढ़ता है।

व्यक्तिगत भिन्नता

छात्र में व्यक्तिगत विभिन्नताएं पाई जाती है। कोई भी बालक अपनी सोचने की क्षमता तथा समझ में एक समान नहीं होता। सभी की यह योग्यता अलग–अलग होती है। मनोविज्ञान का आधार व्यक्ति है। मनोविज्ञान के अनुसार बालकों की रूचि, क्षमताओं, व अभिरूचियों में भिन्नता होती है।

बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाएं

बालकों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं की अलग–अलग विशेषताएं होती है। अतः उनके लिए शिक्षक पद्धतियाँ भी अलग–अलग होनी चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रियाऐ

शिक्षा मनोविज्ञान के विकास के कारण पाठ्यक्रम में अनेक महत्वपूर्ण पाठ्य सहगामी क्रियाएं जैसे वाद–विवाद प्रतियोगिता, कहानी, अंताक्षरी, निबंध, लेखन, स्काउट, नाटक, खेलकूद, संगीत, अभिनय, आदि को स्थान देने के कारण बालकों के सर्वांगीण विकास में बहुत सहयोग मिला है। इन्हें विद्यालय कार्यक्रम का अभिन्न अंग मान लिया गया है।

वातावरण

शुद्ध या स्वच्छ वातावरण छात्रों में विषय सीखने की अधिक रूचि उत्पन्न करता है। बालकों का शारीरिक एवं मानसिक विकास बना रहे और साथ ही बालक भय और तनाव से दूर रहे।

मापन एवं मूल्यांकन

मापन एवं मूल्यांकन की विधियों के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि बालक की योग्यताओं का सही–सही मापन हो एवं उसके द्वारा की गई प्रगति का मूल्यांकन भी सही ज्ञात हो सके।

संवेगात्मक क्रियाएं

शिक्षा मनोविज्ञान में यह जानकारी कि जाती है कि बालकों में थकान क्यों होती है, उनकी शारीरिक वह मानसिक थकान किसी प्रकार दूर की जा सकती है। भय, क्रोध और हर्ष आदि का अध्ययन कर के यह प्रयास किया जाता है बालक संतुलित ढ़ंग से विकसित हो और अच्छा व्यवहार करें।

प्रेरणा

शिक्षा मनोविज्ञान में बालक के व्यवहार को समझने के लिए प्रेरणा एवं मूल प्रवृतियों के अध्ययन का बहुत महत्व है, जिससे यह पता चलता है कि किसी प्रकार का व्यवहार बालक क्यों करता है, उनकी कौन–कौन सी आवश्यकताएं है।

उपर्युक्त विवेचन की आधार पर स्किनर के शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान में वे सब व्यवहार तथा व्यक्तित्व सम्मिलित है जिनका संबंध शिक्षा से है।''

संदर्भ सूची :

1. समाचार पत्र द्वारा प्रकाशित आलेख.
2. Bandura, A., Caprara, G.V., Barbaranelli, C., Regalia, C., & Scabini, E. (2011). Impact of Family Efficacy beliefs on quality of family functioning and satisfaction with family life.
3. Ibid.
4. Fagot, B.I., & Hagan, R. (1991). Observations of parent reactions to sex stereotyped behaviors: Age and Sex effects. Child Development, 62, 617-628.
5. Ibid.
6. Joussemet, M., Koestner, R., Lekes, N., & Landry, R. (2005). A longitudinal study of the relationship of maternal autonomy support to children's adjustment and achievement in school. Journal of Personality, 73, 1215-1235.